REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249.894X
VOLUME . 7 | ISSUE . 10 | JULY . 2018

# राजस्थान में स्थित मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन

डॉ. मीना सिरोला[1] , अन्नपूर्णा शर्मा[2]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर वनस्थली विद्यापीठ ,निवाई, टोंक, राजस्थान.
[2]रिसर्च स्कॉलर, वनस्थली विद्यापीठ,निवाई, टोंक, राजस्थान.

## सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान में स्थित मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन किया गया । न्यादर्श हेतु राजस्थान राज्य में स्थित मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों (130 छात्र एवं 60 छात्रां) का यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से चयन किया गया । मूक बधिर विद्यार्थियों के समायोजन के मापन हेतु स्वनिर्मित समायोजन प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मूल्य का प्रयोग किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि राजस्थान में स्थित मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन में लिंगभेद आधार पर अंतर नहीं पाया जाता है।

## प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र का जीवन उसकी शिक्षा प्रणाली द्वारा अनुप्राणित होता है। यह किसी देश की सभ्यता-संस्कृति का वर्तमान स्पंदन एवं भविष्य की दृष्टि है। यह वह दर्पण है जिसमें किसी राष्ट्र की अस्मिता प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिम्बित होती है। शिक्षा प्रणाली ही समाज व राष्ट्र को गति प्रदान करती है इसीलिए शिक्षा को सर्वदा ही मानव विकास के लिए आवश्यक माना गया है। शिक्षा न सिर्फ व्यक्ति के विकास का साधन है बल्कि यह किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक उत्थान का सबसे शक्तिशाली माध्यम है राष्ट्र का विकास तब तक पूर्ण नही हो सकता जब तक उसका हर व्यक्ति शिक्षित न हो जाए। शिक्षा ही एकमात्र वह साधन है जो पशु और मानव में अन्तर लाने का कार्य करती है। शिक्षा ही वह ज्योतिपुंज है। जो मानव मस्तिष्क के अन्धकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाश को आलोकित करती है।

समाज में एक ऐसा वर्ग भी पाया जाता है जो अपनी विशेष स्थिति के कारण उपेक्षा का पात्र बना हुआ है यह वर्ग है -विशिष्ट बालकों का वर्ग। इस वर्ग के बालकों में मूक बधिरता एक चुनौती है। मूक बधिर बालक ऐसे बालक हैं जो न तो बोल सकते हैं और न ही सुन सकते हैं। इन बच्चों को प्रकृति द्वारा दी गई विशिष्टता से लडने में अपने आपको सक्षम बना सकने के लिए अपने परिवार, वातावरण,विद्यालय एवं समाज के साथ सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक, स्वास्थ्य सम्बंधी समायोजन करना पडता है।

इस हेतु शोधार्थी द्वारा मूक बधिर विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित विभिन्न शोध साहित्यों का अध्ययन किया जिससे शोधार्थी के समक्ष मूक बधिर विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित विभिन्न विचारधाराएँ सामने आईं जिनकों ध्यान में रखकर शोधार्थी द्वारा इस विषयवस्तु को चुना गया। शोधार्थी द्वारा मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित साहित्य का विभिन्न चरों के माध्यम से अध्ययन किया गया यथा-मकाय (1996); डोमी ट्रोविच, सीलेनई वीयरमैन एवं केरन एलए (2001), कमलेश और गोपाल यादव (2009); महमूदी, आर्मिन एवं बेटसून सी. निगम्मा (2011),

अल्का त्रिपाठी (2011), सिंह सुमिता और फ्रांसिस शांतिलता (2015), इनेनरिक, एमण्वारण्, टेन एवं कैरन नोविन (2017)। अन्ततः शोधार्थी के समक्ष विचार आया कि मूक बधिर विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन किया जाये। अतः उपर्युक्त विवेचन के फलस्वरूप शोधार्थी के सम्मुख कुछ स्वाभाविक प्रश्न उत्पन्न हुए जो प्रस्तुत शोध समस्या के चयन का कारण बने। ये प्रश्न निम्न हैं-

- क्या मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन में लिंगभेद के आधार पर विभिन्नताएँ प्रेक्षित होती हैं ?
- क्या मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के सामाजिक समायोजन में विभिन्नताएँ प्रेक्षित होती है?
- क्या मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में विभिन्नताएँ प्रेक्षित होती है?
- क्या मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में विभिन्नताएँ प्रेक्षित होती है?
- क्या मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन में विभिन्नताएँ प्रेक्षित होती है?

## उद्देश्य

मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समयोजन का निम्नलिखित संदर्भ में अध्ययन करना -

- लिंगभेद (छात्र एवं छात्रा)।
- समायोजन के आयाम - सामाजिक समायोजन, सांवेगात्मक समायोजन, शैक्षिक समायोजन, स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन।

## परिकल्पनाएँ

१ मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

२ मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

३ मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के संवेगाात्मक समायोजन के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

४ मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

५ मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के स्वास्थ्य सम्बंधी समायोजन के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

## संक्रियात्मक शब्दों का परिभाषीकरण

(१) **मूक बधिर**- प्रस्तुत अध्ययन में मूक बधिर से आशय ऐसे बच्चों से है जो श्रवण शक्ति और वाणी शक्ति खो चुके हैं और सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

(२) **समायोजन**- लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यक्ति द्वारा अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थिति में वातावरण के साथ सांमजस्यपूर्ण व्यवहार समायोजन कहलाता है। प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन से तात्पर्य मूक बधिर विद्यार्थियों के सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन से हैं।

(३) **माध्यमिक स्तर** - प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से तात्पर्य दसवीं कक्षा में अध्ययनरत मूक बधिर विद्यार्थियों से है।

## शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

## जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में राजस्थान में स्थित मूक-बधिर विद्यालयों में अध्ययरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

## न्यादर्श

शोधार्थी ने अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार राजस्थान में स्थित मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के कुल 190 विद्यार्थियों का चयन किया। इसके अन्तर्गत १३० छात्र एवं ६० छात्रा का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया।

## अध्ययन के चर

**(प) स्वतंत्र चर** - मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी
**(पप) आश्रित चर** - समायोजन

## प्रदत्तों के स्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यानुसार प्रदत्त प्राप्ति का स्रोत राजस्थान राज्य में स्थित मूक-बधिर विद्यालयों में अध्ययरत दसवीं कक्षा के विद्यार्थी हैं अतः अध्ययन का स्रोत प्राथमिक है।

## प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक है।

## अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

समायोजन से सम्बन्धित प्रश्नावली - स्वनिर्मित ।

## सांख्यिकीय

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मूल्य का प्रयोग किया गया है।

## विश्लेषण एवं विवेचना

**परिकल्पना 1 - मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।**

तालिका संख्या-1
मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं का समायोजन

| क्र.सं. | विद्यार्थी | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी-मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्र | 130 | 39.23 | 3.88 | 1.46 |
| 2 | छात्रा | 60 | 34.38 | 2.50 | |

df =188 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक मान 1.64 है।

उपर्युक्त तालिका संख्या १ में मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के समायोजन सम्बंधी आँकडों को प्रदर्शित किया गया है। मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों का मध्यमान 39.23 एवं मानक विचलन 3.88 है। वहीं छात्राओं का मध्यमान 34.38 एवं मानक विचलन 2.50 है।

df 188 के लिए टी-मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.64 है जबकि अवकलित टी-मूल्य 1.46 है अर्थात अवकलित टी-मूल्य सारणी- मूल्य से कम है।

अतः परिकल्पना 'मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' स्वीकृत होती है। परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित होता है कि मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के समायोजन में अन्तर नहीं पाया जाता है।

**परिकल्पना 2 – मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नही पाया जाता है।**

तालिका संख्या-2

मूक बधिर विद्यालयों अध्ययनरत छात्र-छात्राओं का सामाजिक समायोजन

| क्र.सं. | विद्यार्थी | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी-मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्र | 130 | 9.13 | 1.30 | 2.60 |
| 2 | छात्रा | 60 | 8.50 | 1.52 | |

df =188 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक मान 1.64 है।

उपर्युक्त तालिका संख्या 2 में मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के सामाजिक समायोजन सम्बंधी आँकडों को प्रदर्शित किया गया है। मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों का मध्यमान 9.13 एवं मानक विचलन 1.30 है। वहीं छात्राओं का मध्यमान 8.50 एवं प्रमाप 1.52 है। df 188 के लिए टी-मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.64 है जबकि अवकलित टी-मूल्य 2.60 है अर्थात अवकलित टी-मूल्य सारणी-मूल्य से अधिक है।

अतः परिकल्पना'मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं के समाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' अस्वीकृत होती है। परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित होता है कि मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के सामाजिक समायोजन में अन्तर पाया जाता है। छात्रों का सामाजिक समायोजन छात्राओं की अपेक्षा अधिक पाया गया। छात्रों में समूह में कार्य करना, नये मित्र बनाना, नेतृत्व प्रदान करना, सहयोग की भावना अधिक होती है।

**परिकल्पना ३ – मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।**

तालिका संख्या – 3

मूक बधिर विद्यालयों अध्ययनरत छात्र-छात्राओं का संवेगात्मक समायोजन

| क्र.सं. | विद्यार्थी | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी-मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्र | 130 | 11.91 | 2.31 | 0.45 |
| 2 | छात्रा | 60 | 11.71 | 2.26 | |

df =188 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक मान 1.64 है।

उपर्युक्त तालिका संख्या 3 में मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन सम्बंधी आँकडों को प्रदर्शित किया गया है। मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों का मध्यमान 11.91 एवं मानक विचलन 2.31 है। वहीं छात्राओं का मध्यमान 11.71 एवं मानक विचलन 2.61 है। df 188 के लिए टी-मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.64 है जबकि अवकलित टी-मूल्य 0.45 है अर्थात अवकलित टी-मूल्य सारणी- मूल्य से कम है।

अतः परिकल्पना 'मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' स्वीकृत होती है। परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित होता है कि मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर नहीं पाया जाता है।

**परिकल्पना 4 – मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।**

तालिका संख्या – 4

मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं काशैक्षिक समायोजन

| क्र.सं. | विद्यार्थी | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी-मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्र | 130 | 9.78 | 1.53 | 0.17 |
| 2 | छात्रा | 60 | 9.73 | 1.50 | |

df =188 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक मान 1.64 है।

उपर्युक्त तालिका संख्या 4 में मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के शैक्षिक समायोजन सम्बंधी आँकडों को प्रदर्शित किया गया है। मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों का मध्यमान 9.78 एवं मानक विचलन 1.53 है। वहीं छात्राओं का मध्यमान 9.73 एवं मानक विचलन 1.50 है। df 188 के लिए टी-मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.64 है जबकि अवकलित टी-मूल्य 0.17 है अर्थात अवकलित टी-मूल्य सारणी-मूल्य से कम है।

अतः परिकल्पना 'मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।' स्वीकृत होती है। परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित होता है कि मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में अन्तर नहीं पाया जाता है।

**परिकल्पना 5 – मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।**

तालिका संख्या -5

मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन

| क्र.सं. | विद्यार्थी | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी-मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्र | 130 | 2.26 | 0.63 | 0.63 |
| 2 | छात्रा | 60 | 2.33 | 0.62 | |

df =188 एवं 0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक मान 1.64 है।

उपर्युक्त तालिका संख्या 5 में मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य समायोजन सम्बंधी आँकडों को प्रदर्शित किया गया है। मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों का मध्यमान 2.26 एवं मानक विचलन 0.634है। वहीं छात्राओं का मध्यमान 2.33 एवं मानक विचलन 0. 63 है। df 188 के लिए टी-मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.64 है जबकि अवकलित टी-मूल्य 0.63 है अर्थात अवकलित टी-मूल्य सारणी- मूल्य से कम है।

अतः 'परिकल्पना' मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं के स्वास्थ्य सम्बंधी समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।''स्वीकृत होती है। परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित

होता है कि मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययन रत छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य सम्बंधी समायोजन में अन्तर नहीं पाया जाता है।

## शोध परिणाम

प्रस्तुत शोध के परिणाम यह दर्शाते है कि छात्र छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन, शैक्षिक समायोजन एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन में अन्तर नहीं पाया जाता है अर्थात् छात्र-छात्राओं का संवेगात्मक, शैक्षिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन समान है लेकिन सामाजिक सामायोजन छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक पाया गया। जिसका सम्भावित कारण यह है कि छात्रों में समूह के कार्य करना, नये मित्र बनाना, नेतृत्व प्रदान करना, और सहयोग की भावना अधिक होती है।

## शैक्षिक निहितार्थ

### • अभिभावकों की दृष्टि से

प्रस्तुत अध्ययन अभिभावकों की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। बालकों की उन्नति में अभिभावकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। जब बात विशिष्ट बालकों की आती है तो अभिभावकों से अपेक्षाऐं और भी अधिक बढ जाती हैं। अभिभावकों का दायित्व है कि वे बच्चों को कुसमायोजित होने से रोकें। प्रस्तुत शोध से मूक-बधिर बालकों के अभिभावकों को सामाजिक समायोजन, संवेगात्मक समायोजन,शैक्षिक समायोजन एवं स्वास्थ्य सम्बंधी समायोजन को समझने में मदद मिलेगी और वे अपने बच्चों को भली प्रकार से समायोजित कर पाएँगे।

### • विद्यालय प्रशासन की दृष्टि से

प्रस्तुत शोध के अध्ययन से विद्यालय प्रशासन भी मूक-बधिर बालकों के समायोजन के विभिन्न आयामों का आंकलन करके मूक-बधिर बालकों के समायोजन स्तर को उच्च बनाने में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान कर सकेंगे। विद्यालय प्रबन्धन मूक-बधिर बालकों हेतु उचित एवं उपयोगी संसाधनों की व्यवस्था कर उनकी शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक गुणवत्ता को बढाने में सहयोग प्रदान कर सकता है।

### • शिक्षा के नीति निर्माताओं की दृष्टि से

प्रस्तुत शोध से राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर मूक-बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत मूक-बधिर विद्यार्थियों हेतु वास्तविक धरातलीय परिस्थितियों के आधार पर नीति निर्माण में मदद मिल सकेगी। मूक-बधिर विद्यार्थियों के समायोजन पर केन्द्रित नीतियों का निर्माण किया जा सकेगा। साथ ही उपयुक्त संसाधन और उचित वातावरण उपलब्ध कराने में सरकार को अनुशंसा कर सकेंगे। जिससे इस वर्ग को समुचित लाभ मिल सकेगा।

### • आगामी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन की सीमाएँ सीमित है तथा चरों को लेकर अध्ययन किया गया है, इसी प्रकार का अध्ययन विस्तृत परिक्षेत्र तथा अधिक न्यादर्शों पर किया जा सकता है। इस दृष्टि से निम्नलिखित सुझाव अपेक्षित हैं-

१. प्रस्तुत शोध में मूक-बधिर विद्यार्थियों चुना गया है। इसके अतिरिक्त भावी शोध अध्ययन हेतु अन्य श्रेणी यथा- शारीरिक विकलांग, मानसिक विकलांग एवं दृष्टि विकलांग को भी सम्मिलित कर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

२. प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन किया गया है इसे मूक-बधिर विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों -प्रधानाचार्यो के समायोजन पर भी किया जा सकता है।

३. प्रस्तुत शोध में केवल मूक-बधिर विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त भावी शोध हेतु सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन किया जा सकता है।

४. प्रस्तुत शोध में केवल माध्यमिक स्तर के मूक-बधिर विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त भावी शोध हेतु प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के मूक-बधिर विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन किया जा सकता है।

## अध्ययन की परिसीमाएँ

प्रस्तुत शोध को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत सीमांकित किया गया है।

१. प्रस्तुत शोध में केवल माध्यमिक स्तर के कक्षा 10 वीं के मूक-बधिर विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
२. प्रस्तुत शोध में समायोजन केवल चार आयामों- सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य सम्बंधी समायोजन को ही सम्मिलित किया गया है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

अग्रवाल, जे.सी. (2009), शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली : शिप्रा पब्लिकेशन्स।

बाजपेयी, एल.बी. एण्ड बाजपेयी, अमिता (2006), विशिष्ट बालक, लखनउ : भारत बुक सेन्टर।

बलसारा, मैत्रेया (2014), इन्क्लूशिव एज्यूकेशन फॉर स्पेशल चिल्ड्रन, नई दिल्ली : कनिष्का पब्लिशर्स एण्डडिस्ट्रीब्यूटर्स ।

बुच, एम.बी. (1983&88), फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन, वाल्यूम द्वितीय, नई दिल्ली : एन. सी.ई.आर.टी.।

दास, एन. (2003), इन्टीग्रेटेड एज्यूकेशन फॉर चिल्ड्रन विद स्पेशियल नीड, नई दिल्ली : डोमीनेन्ट पब्लिशर्स।

गैरेट, एच.ई. (2006), स्टेटिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एज्यूकेशन, नई दिल्ली : कोसमॉस पब्लिकेशनस।

गुप्ता, एस. पी. (2005), सांख्यिकीय विधियॉ, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

हॉल, जी.स्टेनले (2003), प्रोफेट्स ऑफ एज्यूकेशन (प्रॉबलम्स ऑफ एज्यूकेशन), नई दिल्ली : सरूप एण्ड सन्स।

हैरी डानिल्स (1996), स्पेशल एज्यूकेशन, लन्दन : लन्दन पब्लिकेशन।

हिफ्जुर, रहमान (2007), हिस्ट्री ऑफ स्पेशल एज्यूकेशन इन इण्डिया, नई दिल्ली : संजय प्रकाशन।

मंगल, एस.के. (2016), एज्यूकेटिंग एक्सेप्शनल चिल्ड्रन, एन इन्ट्रोडक्शन टू स्पेशल एज्यूकेशन, नई दिल्ली : पी.एच.आई.लर्निंग प्रा. लि.।

तिवारी गोविन्द (1985), शैक्षिक एवं मनोविज्ञान के मूलाधार, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।

थापा, कोमिला एट अल (2008), पर्सपेक्टिव ऑन लर्निंग डिसेबिलिटीज इन इण्डिया, करेण्ट प्रेक्टिसेज एण्ड प्रोस्पेक्टस, नई दिल्ली : सेज पब्लिकेशन्स इण्डिया प्रा.लि.